Sunday Edit-21 May.qxd 5/20/2017 7:36 PM Page 1

अजीत समाचार

विचार प्रवाह

हमारी हर कार्रवाई प्रत्येक व्यवसाय और प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की ओर केन्द्रित होनी चाहिए। —डा. अब्दुल कलाम

नई टैक्स प्रणाली की सम्भावनाएं

गत लम्बे समय से वस्तुओं और सेवाओं संबंधी कर (जी.एस.टी.) की चर्चा चलती रही थी। इस तरह की प्रस्तावित कर प्रणाली लागू करने के बारे में बहुत गहन तथा विस्तृत विचार-विमर्श सभी पार्टियों और पत्रकारिता के क्षेत्रों द्वारा किया गया। इस प्रणाली को अधिक सरल और प्रभावशाली माना गया है। अधिकतर देशों ने दुनिया में इस टैक्स प्रणाली को अपनाया है। इसका सीधा तात्पर्य यह है कि सभी राज्यों में अलग-अलग सेवाओं और वस्तुओं पर साझे तौर पर निर्धारित की गई दरों के अनुसार टैक्स लगेंगे और इनको एक साझी कर प्रणाली द्वारा एकत्रित किया जायेगा और उसमें से राज्यों का बनता हिस्सा दिया जायेगा।

इससे समूचे देश में एक साझी टैक्स प्रणाली लागू हो जायेगी। कर प्रणाली में किसी तरह की विभिन्नता नहीं होगी। वित्त मंत्री अरुण जेतली ने गत लम्बे समय से इस संबंधी राज्यों और केन्द्र के बीच एक साझी राय बनाने के लिए बड़ी भूमिका अदा की है। इसमें अनेक तरह के संशोधन भी किये गये हैं। कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार के समय भी इसके बारे में लगातार विचार-चर्चा होती रही परन्तु उस समय भारतीय जनता पार्टी ने इसको लागू न होने देने के लिए काफी बाधाएं डाली थीं। परन्तु इस कर प्रणाली के लाभों को देखते हुए अब भाजपा ही यह प्रबंध लागू करने के लिए अधिक प्रयासरत प्रतीत होती है। पहले केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा सर्विस टैक्स या सरचार्ज लगाया जाता था। अब इसको साझा कर दिया गया है। अरुण जेतली के अनुसार यह प्रणाली लागू होने से महंगाई नहीं बढ़ेगी। यदि अपने इस उद्देश्य में सरकार सफल हो जाती है तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि मानी जायेगी। इस कर प्रणाली से स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रों को बाहर रखने से इन क्षेत्रों की सेवाओं को बेहतर बनाने में भी सहायता मिल सकती है। आज शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहद आवश्यक माना जा रहा है। जिस तरह श्रीनगर में दो दिवसीय बैठक में इस संबंध में फैसले लिए गए हैं, उनसे यह प्रभाव बनता है कि सरकार अधिक आमदनी खर्च करने वाले पर ज्यादा टैक्स लगाने की इच्छुक है। इसीलिए इसके चार स्लैब निश्चित किए गए हैं, जिनमें टैक्स दरें 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 28 प्रतिशत होंगी। उदाहरण के लिए आम हवाई यात्रा पर टैक्स नहीं लगेगा, जबकि उच्च श्रेणी पर यह टैक्स 12 प्रतिशत होगा, जबकि आम रेलगाड़ियों, मैट्रो आदि को इस टैक्स से छूट दी जायेगी। इसी तरह खाना खाने वाले रेस्टोरेंटों और होटलों को अलग-अलग वर्गों में बांटा गया है। बैंक और बीमा सेवाओं में टैक्स बढ़ेगा। इसी तरह दूरसंचार सेवाओं के लिए भी अधिक टैक्स लगेगा।

समूचे नए टैक्स के प्रबंध को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अलग-अलग क्षेत्रों में लागू पिछली टैक्स दरों से बहुत ज्यादा अन्तर नहीं डाला गया परन्तु उच्च वर्गों के लिए टैक्स की दर अवश्य बढ़ाई गई है। देश के आर्थिक क्षेत्र में अब तक इसको सबसे बड़ा कदम माना गया है। उम्मीद की जा सकती है कि यदि यह टैक्स प्रणाली ठीक तरह लागू हो जाती है तो इससे आर्थिक क्षेत्र में बड़ा सुधार होगा और यह देश के लिए उठाया गया एक प्रभावशाली और लाभदायक कदम साबित हो सकता है।

—बरजिन्दर सिंह हमदर्द

सम्पादक के नाम पत्र

टी.वी. चैनलों पर बढ़ रही अश्लीलता

विदेशी टी.वी. चैनलों पर लगातार अश्लीलता बढ़ती जा रही है, जिससे हमारी नौजवान पीढ़ी

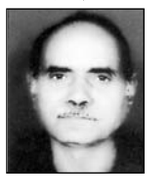

पर अश्लीलता से बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यदि बढ़ रही अश्लीलता पर जल्दी पाबंदी न लगाई गई तो हमारे गुरुओं-पीरों तथा देश भक्तों का यह देश गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा जायेगा। घर-घर टी.वी. चैनलों का प्रचलन चल रहा है। जिसमें शहरों, गांवों में भी टी.वी. चैनलों ने अपना जाल बिछाया हुआ है। इस बढ़ रही अश्लीलता को जल्दी से रोका जाये ताकि हमारी पुरानी सांस्कृतिक सभ्यता को कोई आंच न आये। विदेशी चैनलों ने हमारे राष्ट्रीय चैनल, दूरदर्शन को अधूरा करके रख दिया है। यह चैनल लोग बहुत कम देख रहे हैं। दूसरी तरफ निजी विदेशी चैनलों के प्रचलन से हमारे देश को खतरा पैदा हो सकता है।

—डा. सुभाष पुरी 'राही'
मो. 81969-72992

रिश्तों की परिभाषा ही बदल गई

जीवन के उतार-चढ़ाव के कारण रिश्ते बनते बिगड़ते रहते हैं। पारिवारिक कार्य क्षेत्र के, दोस्ती के और

मानवीय संवेदनाओं के। भारतीय समाज में हर प्रकार के रिश्ते का विशेष महत्व है। अब धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। भारतीय मां को पहले हर रोज़ एक कार्ड दिया जाता था कि सारे दिन क्या किया, किससे मिले? किसी दिन खाना थोड़ा कम खाया तो क्यों आदि लेकिन अब मदर्स डे के एक कार्ड से मां को चलाना होता है। दोस्ती का रिश्ता भी अन्धे और लंगड़े की तरह है। अब 'फ्रैंडशिप बैल्ट' आ गए हैं और हर छोटी बड़ी बात पर कार्ड्स का देना-लेना है।

नए ज़माने में कुछ नए तरह के रिश्ते भी हैं। बदलते परिपेक्ष में जिस रिश्ते में ज्यादा बदलाव आया है, वो सम्भवत: पति-पत्नी का है। समर्पण और त्याग की जगह अब दंभ और स्वार्थ दिखाई देता है।

—राम प्रकाश शर्मा

ग्लेशियरों के अस्तित्व को बचाने की ज़रूरत

पर्यावरण
जाहिद खान

नैनीताल हाईकोर्ट ने गंगा, यमुना नदियों के बाद गंगोत्री और यमुनोत्री ग्लेशियरों को भी जीवित व्यक्ति यानी एक नागिरक के अधिकार दे दिए हैं। अदालत का कहना है कि इनको साफ-सुथरा रखने और संरक्षण देने की ज़रूरत है। इन्हें भी कानूनी अधिकार मिलना चाहिए। ग्लेशियर ही नहीं, इस इलाके की बाकी नदियां, झील-झरने और घास के मैदान भी इस श्रेणी में रखे जाएं। न्यायमूर्ति राजीव शर्मा और न्यायमूर्ति आलोक सिंह की संयुक्त खंडपीठ ने ये महत्वपूर्ण निर्देश हाल ही में एक जनहित याचिका के संदर्भ में दिए हैं।

अपने फैसले में अदालत ने कहा है कि इन ग्लेशियरों को नुक्सान पहुंचाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। ग्लेशियरों और नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए अदालत ने सरकार को और भी कई निर्देश दिए हैं। मसलन, सरकारें छह महीने में गंगा नदी के लिए 'अंतरप्रांतीय परिषद्' का गठन करें। आगामी तीन महीने के अंदर गंगा किनारे प्रदूषण रहित श्मशान घाट बनाए जाएं।

अदालत के इस फैसले के बाद अब गंगोत्री और यमुनोत्री ग्लेशियर को संवैधानिक व्यक्ति का दर्जा हासिल हो गया है। देश के नागरिकों की तरह उन्हें भी संवैधानिक अधिकार हासिल होंगे। इन्हें प्रदूषित करना या नुक्सान पहुंचाना जीवित इन्सानों को नुक्सान पहुंचाने जैसा अपराध होगा। ग्लेशियरों के अस्तित्व को बचाने के लिए ऐसे ही किसी क्रांतिकारी फैसले की दरकार थी।

ग्लेशियरों को जीवित व्यक्ति का दर्जा मिलने से निश्चित तौर पर इन पर्वतीय इलाकों में मानवीय गतिविधियां सीमित होंगी, जिसका असर ग्लेशियर की सेहत पर पड़ेगा और इनके पिघलने की गति भी कम होगी। पर्यावरण सुधारने और ग्लेशियरों को बचाने के लिहाज़ से अदालत का यह फैसला सही ही है।

उत्तराखंड के पर्यावरण और प्रमुख नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए सरकार और न्यायपालिका की यह कोई पहली कोशिश नहीं है। इससे पहले भी केन्द्र सरकार ने एक अभिनव कदम उठाते हुए उत्तरकाशी से गंगोत्री धाम तक के इलाके को इको सेंसिटिव ज़ोन घोषित कर दिया था। वहीं अभी ज्यादा दिन नहीं बीते हैं, जब इसी नैनीताल हाईकोर्ट ने अपने एक दीगर फैसले में गंगा और यमुना नदियों को जीवित व्यक्तियों का दर्जा दिया था और इन नदियों के किनारों से अतिक्रमण हटाने एवं कचरा, गंदगी डालने के खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात कही थी।

गौरतलब है कि हरिद्वार निवासी अधिवक्ता ललित मिगलानी ने नैनीताल हाईकोर्ट में एक जनहित याचिका दायर कर अदालत से गंगा नदी को प्रदूषण से मुक्त करने की गुहार लगाई थी। याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में अदालत से आग्रह किया था कि गंगोत्री, यमुनोत्री समेत अन्य ग्लेशियरों एवं हिमालय को भी गंगा-यमुना नदी की तर्ज पर जीवित व्यक्ति का दर्जा दिया जाए। बहरहाल, अदालत ने इस मामले में पहले तो संबंधित पक्षों की राय जानी और उसके बाद अपना फैसला सुनाया। अदालत ने अपने इस विस्तृत फैसले में राज्य के मुख्य सचिव को अधिकृत किया है कि वे शहर, कस्बों व नदी और तालाब किनारे रह रहे लोगों को इस आदेश के बारे में जानकारी देकर जागरूक करें। अदालत ने सरकार से यह भी सुनिश्चित करने को कहा है कि गंगा नदी में किसी भी अवस्था में मल-जल न जाने पाए। जो प्रतिष्ठान सीवर व अन्य गंदगी बहा रहे हैं, उन्हें सील कर दिया जाए। पीठ ने इस काम के लिए बाकायदा कुछ लोगों की ज़िम्मेदारी भी तय की है। उत्तराखंड के मुख्य सचिव, नैशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के निदेशक प्रवीण कुमार, नमामी गंगे के कानूनी सलाहकार ईश्वर सिंह, चंडीगढ़ ज्यूडिशियल एकेडमी के निदेशक बलराम

के. गुप्ता व सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता एम.सी मेहता व उत्तराखंड के महाधिवक्ता को इनकी सुरक्षा के लिए बतौर संरक्षक नियुक्त किया गया है। गंगोत्री और यमुनोत्री ग्लेशियर की ओर से ये लोग अब कहीं भी, कोई भी मामला दर्ज कर सकेंगे। ग्लेशियर और उनसे निकलने वाली नदियों की जीवंतता के दर्जे और इनके अधिकारों की हिफाज़त की जवाबदेही अब सीधे-सीधे इन अभिभावकों की होगी। उत्तराखंड में हिमालय क्षेत्र में करीब 1200 ग्लेशियर हैं। गंगोत्री ग्लेशियर हिमालय क्षेत्र के सबसे बड़े हिमनद में से एक है। यह ग्लेशियर करीब 300 छोटे-बड़े ग्लेशियरों से मिलकर बना है। गंगोत्री ग्लेशियर समूह के अंतर्गत ढोकरानी-बमक ग्लेशियर, चोराबाड़ी ग्लेशियर, द्रोणागिरी-बागनी ग्लेशियर, पिण्डारी ग्लेशियर, मिलम ग्लेशियर, कफनी, सुंदरढुंगा, सतोपंथ, भागीरथी खर्क, टिप्रा, जौन्धार, तिलकू और बंदरपूंछ ग्लेशियर सबसे बड़े ग्लेशियर हैं। गंगोत्री ग्लेशियर का आयतन तकरीबन 27 घन किलोमीटर है। इसकी लम्बाई 30 किलोमीटर और चौड़ाई तकरीबन 4 किलोमीटर है। गंगोत्री ग्लेशियर शिवलिंग, थलय सागर, मेरू और भागीरथी प्रथम, द्वितीय और तृतीय बर्फीली चोटियों से चारों तरफ से घिरा हुआ है। गंगोत्री ग्लेशियर के मुहाने गौमुख से ही भागीरथी नदी यानी गंगा का उद्गम होता है।

दूसरी ओर, यमुनोत्री ग्लेशियर यमुनोत्री मंदिर के पीछे एक छोटा-सा ग्लेशियर है। इस ग्लेशियर पर अभी तक बहुत काम न होने की वजह से वैज्ञानिकों को इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। विभिन्न वैज्ञानिक शोध बता रहे हैं कि पूरे हिमालय क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन हवा के तापमान में बढ़ौतरी दर्ज हो रही है। जिसके प्रभाव से हिमालय में छोटे-बड़े करीब 9575 ग्लेशियर जूझ रहे हैं। बढ़ते तमपान की वजह से ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार बढ़ रही है। गर्म हवा की वजह से हिमालय की जैव विविधता प्रभावित हुई है। जब-तब जंगल में लगने वाली आग और उससे निकलने वाला धुआं और कार्बन भी ग्लेशियरों को प्रभावित करते हैं। इस धुएं और कार्बन से ग्लेशियरों पर एक महीन काली परत नज़र आने लगी है। हिमालय से 100 से ज्यादा छोटी-बड़ी नदियां निकलती हैं। ग्लेशियर जब पिघलते हैं, तो इस पर चढ़ा कार्बन पानी के साथ बहकर लोगों तक पहुंच जाता है जो मानव सेहत के लिए खतरनाक साबित होता है।

ग्लोबल वार्मिंग से पूरे हिमालय क्षेत्र के तापमान में तेज़ी से बदलाव हो रहा है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल से लेकर उत्तराखंड तक में हो रहे अलग-अलग शोध इसकी पुष्टि कर रहे हैं। हवा में बदलाव का असर ग्लेशियरों की सेहत पर भी पड़ रहा है। ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार बढ़ी है, जिससे वे सिकुड़ रहे हैं। आलम यह है कि हिमालय के कई ग्लेशियर हर साल दस से बारह मीटर तक पीछे खिसक रहे हैं।

जहां तक गंगोत्री ग्लेशियर की बात है, तो यह ग्लेशियर हर साल अठारह मीटर पीछे खिसक रहा है। ऐसे में इन्हें बचाने के लिए जल्द प्रभावी उपाय करने की ज़रूरत है ताकि ग्लेशियर और पर्यावरण में हो रहे इस नकारात्मक बदलाव को रोका जा सके। यदि अब भी ऐसे उपाय न किए गए, तो पूरे देश के पर्यावरण पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। ग्लेशियरों को बचाने के लिए हमारे सामने ग्लोबल वार्मिंग की चुनौती तो है ही, वहीं गलत मानवीय आदतें व नदियों और ग्लेशियर के प्रति बुरा व्यवहार भी एक बड़ी चुनौती है। सब कुछ जानते हुए भी हम अपनी आदतें बदलने को तैयार नहीं हैं। यही वजह है कि इन मामलों में अब अदालतों को हस्तक्षेप करना पड़ रहा है। नैनीतल हाईकोर्ट का हालिया फैसला इसी परिप्रेक्ष्य में है, जिसका सभी को स्वागत करना चाहिए। (स्रोत फीचर्स)

ब्रिटिश कोलम्बिया के चुनावों में रही पंजाबियों की चढ़त

निक-सुक
गुलज़ार सिंह संधु

87 सदस्यीय ब्रिटिश कोलम्बिया विधानसभा में सात पंजाबियों की जीत ने अपनी शान को पहले की तरह बरकरार रखा है। विशेषता यह है कि इनमें से छ: पंजाबी अकेले सरी से जीते हैं। इनमें से एक रचना सिंह पंजाब के प्रसिद्ध हस्ताक्षर तेरा सिंह चन्न की नाती हैं। उनका ननिहाल गांव भम्मीपुरा है। यह गांव जगराओं के हठूर के मध्य में स्थित है। हठूर गांव संघोल की तरह पुराना स्थल है, जहां भगवान महावीर ने चौमासा काटा था। रचना के पिता रघुबीर सिंह हैं, जो 'सृजना' के सम्पादक के तौर पर जाने जाते हैं। रचना मुझे अपने ताये-चाचों में गिनती हैं। मैंने उनको मनोविज्ञान की एम.ए. करते ही पंजाबी रैडक्रास के नशा छुड़ाओ केन्द्र में सलाहकार लगाया था, जहां से वह बैंकूवर चली गई।

उन्होंने कनाडा के बैंकूवर शहर में इन्फर्मेशन सर्विसज़ में नौकरी की जहां वह नशों और घरेलू हिंसा के मामलों में टैलीफोन द्वारा कौंसलिंग करती थी। गत छ: महीनों से वह क्यूपी (कैनेडियन यूनियन ऑफ पब्लिक इम्प्लाइज़) नाम की कैनेडा की सबसे बड़ी यूनियन में नैशनल रिप्रेंजेटेटिव के तौर पर कार्य करती रही है। रचना ने ग्रीन टिम्बर सरी से ब्रेंडालाक नाम की महिला को बड़े अन्तर से हराया। अन्य जीतें भी महत्वपूर्ण हैं। न्यूटन से एन.डी.पी. के

रचना सिंह

उम्मीदवार के तौर पर लगातार चौथी बार जीत हासिल करके विधानसभा सदस्य बनने वाले हैरी बैंस का पैतृक गांव फगवाड़ा के निकट हरदासपुर है। उन्होंने चार दशक पूर्व अपने परिवार के साथ कनाडा प्रवास किया था और उस समय के आम प्रवासियों की तरह पहले मिल वर्कर के तौर पर कार्य किया और फिर स्टील वर्कर्ज़ यूनियन के नेता तथा नस्ली समानता और प्रवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले सक्रिय व्यक्ति के तौर पर उभरे। कार्यकर्ताओं तथा देसी भाईचारे में उनका बहुत प्रभाव है।

गोरे के साथ विवाह के बाद जिन्नी सिम्ज के तौर पर जानी जाती जोगिन्द्र कौर पृष्ठभूमि के तौर पर जालन्धर ज़िले के गांव पबवां से संबंधित है, जो छोटी आयु में ही अपने माता-पिता के साथ इंग्लैंड गई थी। वहीं उन्होंने पढ़ाई करके मानचेस्टर यूनिवर्सिटी से डिग्री हासिल की। कनाडा में प्रवास करने के बाद वह स्कूल अध्यापिका बनी और बी.सी. टीचर्ज़ फैडरेशन की अध्यक्षा 2011 में वह एन.डी.पी. उम्मीदवार के तौर पर संसद की सदस्य रह चुकी हैं।

पंजाब मूल के 18 पंजाबी चुनावों में कूदे और उनमें से सात ब्रिटिश कोलम्बिया की असैंबली से सदस्य चुने गए हैं। इनमें से 6 एन.डी.पी. (न्यू डैमोक्रेटिक पार्टी) से संबंधित हैं। लुधियाना ज़िले से संबंधित राज चौहान और बठिण्डा से संबंधित जगरूप बराड़ इससे पहले भी सदस्य रहे हैं। पहली बार चुने जाने वाले एन.डी.पी. के दो युवा सदस्यों में रचना सिंह के अलावा गुरदासपुर ज़िले से संबंधित रवि काहलों शामिल हैं, जो कनाडा की हॉकी टीम के ओलम्पियन खिलाड़ी रहे हैं। वह लिबरल पार्टी के उम्मीदवार के तौर पर विजेता रहे। एकमात्र पंजाबी जस्स जौहल रचना के जीवन साथी गुरप्रीत सिंह की तरह टीवी पत्रकार रह चुके हैं। गुरप्रीत अभी भी सक्रिय पत्रकार हैं।

सिख इस जीत को सम्मान से देखते हैं। कनाडा में सिखों ने लगभग पूरी सदी बहुत दुख झेलकर ऐसा स्थान हासिल किया है। कनाडा के 2015 के चुनावों में लिबरल पार्टी द्वारा 15 सिख संसद के लिए चुने गए थे, जो लोग स्वदेशी सिखों को सिर्फ मुश्किलें खड़ी करने वाले ही समझ बैठे हैं, उनके लिए ये बात सहन करनी आसान नहीं। लिबरल पार्टी के प्रमुख जस्टिन ट्रूडो जो कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री ट्रूडो के सपुत्र हैं, ने प्रधानमंत्री बनते ही 15 सिख सदस्यों में से पांच को मंत्री बनाकर नया इतिहास रच दिया। कैनेडियन समाज ने पहली बार उनको सही अर्थों में 'कनाडा को अपना देश समझो' जैसा एहसास करवाया, जो उस देश के इतिहास का नया कांड है, ठीक ही ट्रूडो ने सिखों के अपने पैतृक देश में कभी भी इतनी संख्या में केन्द्र सरकार में मंत्री न बनने का ताना भी दिया था, जिसको दुनिया भर का सिख भाईचारा बहुत महत्व दे रहा है।

अंतिका

(माधव कौशिक)

किसी सैलून के आगे लिखा था
येह दुनिया सिर्फ चेहरा देखती है
मुझे तो नाज़ है अपनी नज़र पर
जो शहरों में भी दरिया देखती है
अंधेरे में उजाला देखती है
कभी जब कौम सपना देखती है।

sandhugulzar@yahoo.com

साझे उम्मीदवार के तौर पर उभर सकते हैं प्रणब मुखर्जी

राजनीति के गलियारे से
राहिल नोरा चोपड़ा

बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार द्वारा राष्ट्रपति के एक और कार्यकाल के लिए प्रणब मुखर्जी का नाम सामने लाने से यह अनुमान

लगने शुरू हो गए हैं कि मौजूदा राष्ट्रपति के सर्व सांझे उम्मीदवार बनने की सम्भावनाएं हैं। नितीश कुमार द्वारा प्रणब का नाम सामने लाने की रणनीति के कारण मोदी पर दबाव बढ़ा है, क्योंकि उनके द्वारा गत तीन वर्षों के दौरान प्रणब मुखर्जी के योगदान के लिए उनकी काफी सराहना की गई थी। भाजपा का विचार मंडल भी उनको दूसरी बार राष्ट्रपति बनाने के पक्ष में है। उसका विचार है कि इससे पार्टी को 2019 के लोकसभा चुनावों और इसके बाद होने वाले बंगाल और उड़ीसा के विधानसभा चुनावों में लाभ होगा।

राष्ट्रपति भवन में प्रणब मुखर्जी के साथ संघ के अध्यक्ष मोहन भागवत की मुलाकात इस सम्भावना को और मज़बूत बनाती है। कांग्रेस को भी प्रणब मुखर्जी मंजूर हो सकते हैं। इसके अलावा ममता बैनर्जी के पास भी बंगाल के लोगों को यह दर्शाने का अवसर है कि बंगालियों के लिए वह हर समय तैयार हैं, जबकि इसको स्वीकार करने के बिना उसके पास अन्य कोई रास्ता भी नहीं होगा, इसके अलावा पंचायत तथा लोकसभा चुनावों में भी ममता की पार्टी के लिए इसके अच्छे परिणाम हो सकते हैं।

इन्दिरा गांधी

'India's India' पुस्तक को जारी करने के समारोह के दौरान राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कहा कि इन्दिरा गांधी अब तक भारत के लोगों की सबसे पंसदीदा प्रधानमंत्री हैं। 1977 में चुनावों के पतन के बाद उन्होंने कांग्रेस पार्टी के लिए निर्णायक फैसले लेकर इसको पुन: संगठित किया। इस पुरानी पार्टी को स्वयं को संवारने के लिए उनके इस तरह के अन्य गुप्त संदेशों को देखना चाहिए। मुखर्जी ने हरिमंदिर साहिब में किये गये 'आपरेशन ब्लू स्टार' के बारे में इन्दिरा के दृष्टिकोण संबंधी बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री होने के बावजूद वह कोई फैसला नहीं ले रही थीं। उनको हरिमंदिर साहिब पर कुछ भी करने से डर लगता था। उनको याद है कि पानीपत की तीसरी लड़ाई के बाद अहमदशाह अब्दाली पर बुरा समय आया था क्योंकि उसने हरिमंदिर साहिब पर हमला किया था।

उन्होंने कहा कि यह नहीं कि इन्दिरा गांधी को कुछ पता नहीं था, वह सब अच्छी तरह से जानती थीं और उन्होंने मुझे कहा था कि इतिहास में कुछ कार्यों को चाहे बाद में ठीक न माना जाए परन्तु उस समय वह बेहद प्रासंगिक होते हैं। मुखर्जी ने कहा कि वह इस घटना के हवाले से इन्दिरा गांधी के निडर होने के बारे में बता रहे हैं और उन्होंने कहा कि इन्दिरा गांधी 20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक हैं।

कांग्रेस के नए प्रदेश प्रमुख

कांग्रेसी गलियारों में अलग-अलग राज्यों के प्रदेश प्रमुखों की नियुक्ति संबंधी नामों पर विचार हो रहे हैं। लोकसभा में मलिक अर्जुन खड़गे के स्थान पर ज्योर्तिरादित्य सिंधिया को कांग्रेस पार्टी का नेता बनाया जा सकता है। खड़गे को संसद की पब्लिक अकाऊंट कमेटी (पी.ए.सी.) का नया चेयरमैन भी नियुक्त किया गया है। इसके अलावा वह 2018 में होने वाले कर्नाटक के विधानसभा चुनावों से पहले वहां जाने में दिलचस्पी रखते हैं।

सूत्रों के अनुसार खड़गे को कर्नाटक कांग्रेस कमेटी का प्रमुख बना दिया जायेगा, जबकि कमलनाथ को मध्य प्रदेश में पार्टी की इकाई का प्रमुख बनाया जा सकता है। यह अफवाह भी है कि कांग्रेस के सचिव शकील अहमद को बिहार कांग्रेस कमेटी के प्रमुख अशोक चौधरी जोकि राज्य में मंत्री हैं, के स्थान पर कांग्रेस का प्रमुख बनाया जा सकता है। रावड़ी देवी की सरकार में अहमद मंत्री रह चुके हैं और वह मनमोहन सिंह की पूर्व सरकार के समय केन्द्रीय राज्य संचार मंत्री और रक्षा मंत्रालय में रह चुके हैं। मार्च, 2011 में उनको पश्चिम बंगाल और झारखंड में पार्टी अध्यक्ष बनाया गया था। पूर्व केन्द्रीय मंत्री अखिलेश सिंह और पूर्व प्रदेश कमेटी अध्यक्ष अनिल शर्मा के नाम भी बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष के लिए लिए जा रहे हैं।

कांग्रेस सेवा दल

कांग्रेस के उपाध्यक्ष राहुल गांधी के महिन्द्रा जोशी के कार्य से नाराज़ होने के कारण कांग्रेस खेमे में कांग्रेस सेवा दल के नेतृत्व में बदलाव की चर्चा है। दूसरी तरफ ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के महासचिव मुकुल वासनिक के नेतृत्व में एक 22 सदस्यीय कमेटी बनाई गई है, जो एन.एस.यू.आई. (कांग्रेस का छात्र विंग) के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए आए 180 आवेदनों का निरीक्षण करेगी। इस तरह की प्रक्रिया पहली बार अपनाई जा रही है। इससे किसी भी कार्यकर्ता के एक वर्ष के छात्र विंग में सराहनीय कार्य को मुख्य रखते हुए बिना किसी आयु सीमा के उसको राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया जा सकता है। पार्टी सूत्रों के अनुसार जवाहर लाल यूनिवर्सिटी में एन.एस.यू.आई. के उपाध्यक्ष अनिल कुमार मीना के नाम पर भी इस पद के लिए विचार किया जा सकता है। इसके अलावा मध्य प्रदेश इकाई के अध्यक्ष विपिन वानखेड़े और पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रोहित चौधरी भी दौड़ में शामिल हैं।

उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

उत्तर प्रदेश भाजपा इकाई के अध्यक्ष के लिए कई नेताओं के नामों पर चर्चा हो रही है। भाजपा प्रमुख केशव प्रसाद मौर्या के योगी सरकार में उप-मुख्यमंत्री बनने के साथ ही पार्टी को उनके स्थान पर कोई नया नेता ढूंढना पड़ेगा और इसके लिए आगरा से सांसद राम शंकर खथेड़िया का नाम सबसे आगे है, और इसके साथ ही कौशम्बी से सांसद विनोद कुमार शौंकर और विद्यासागर शौंकर के नाम भी चर्चा में हैं।

नंदी एयर लाईन बनी चर्चा का विषय

इलाहाबाद में यह बातें चर्चा का विषय हैं कि उत्तर प्रदेश के उड्डयन मंत्री आनंद कुमार नंदी अपनी एयर लाईन खरीदने जा रहे हैं। इस एयर लाईन का नाम इसके मालिक के नाम पर नंदी एयर लाईन होगा। लोगों को हैरानी हो रही है कि इस एयरलाईन का हश्र भी कहीं नंदी की अन्य योजनाओं जैसा तो नहीं होगा। गत 6 महीनों से निरंजन सिनेमा इलाहाबाद के आगे नंदी घी, नंदी चावल, नंदी आटा आदि के लगे हुए पोस्टर अब हटा दिये गये हैं। श्री नंदी द्वारा इलाहाबाद आने पर दरबार लगाकर लोगों से बातचीत की जाती है और उनकी मुश्किलें सुनीं जाती हैं। अब जब अगली बैठक होगी तो लोग उनसे एयर लाईन के बारे में जानने के लिए उत्सुक होंगे।